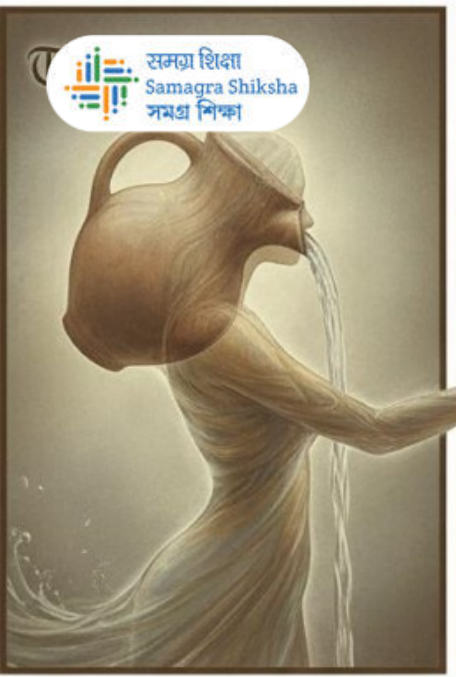






समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 12

मृत्तिका

(नरेश मेहता) (1922 -2000)

भाग – 2

अभ्यासमाला

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बोध एवं विचार —

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दोः

(क) रौंदे और जोते जाने पर भी मिट्टी किस रूप में बदल जाती है?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बोध एवं विचार —

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दोः

(क) रौंदे और जोते जाने पर भी मिट्टी किस रूप में बदल जाती है?

उत्तर : रौंदे और जोते जाने पर मिट्टी धन-धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

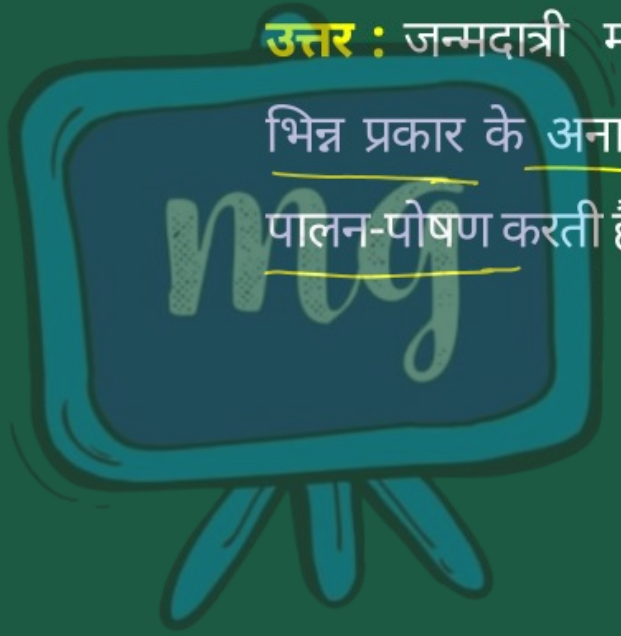
(ख) मिट्टी के 'मातृरूपा' होने का क्या आशय है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) मिट्टी के 'मातृरूपा' होने का क्या आशय है?



उत्तर : जन्मदात्री मातृ की तरह मिट्टी भी अपनी गर्भ से भिन्न प्रकार के अनाज आदि उपजाते हैं और इससे हमें पालन-पोषण करती है। इसलिए वह भी हमारी मातृरूपा है।

(ग) जब मनुष्य उद्यमशील रहकर अपने अहंकार को पराजित करता है तो मिट्टी उसके लिए क्या बन जाती?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) जब मनुष्य उद्यमशील रहकर अपने अहंकार को पराजित करता है तो मिट्टी उसके लिए क्या बन जाती?

उत्तर : जब मनुष्य उद्यमशील रहकर अपने अहंकार को पराजित करता है,तब मिट्टी उसके लिए प्रतिमा बनकर आराध्य हो जाती है।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर लिखोः

(क) 'मृत्तिका' कविता में पुरुषार्थी मनुष्य के हाथों आकार पाती मिट्टी के किन-किन स्वरूपों का उल्लेख किया गया है ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उतर लिखोः

(क) 'मृत्तिका' कविता में पुरुषार्थी मनुष्य के हाथों आकार पाती मिट्टी के किन-किन स्वरूपों का उल्लेख किया गया है ?

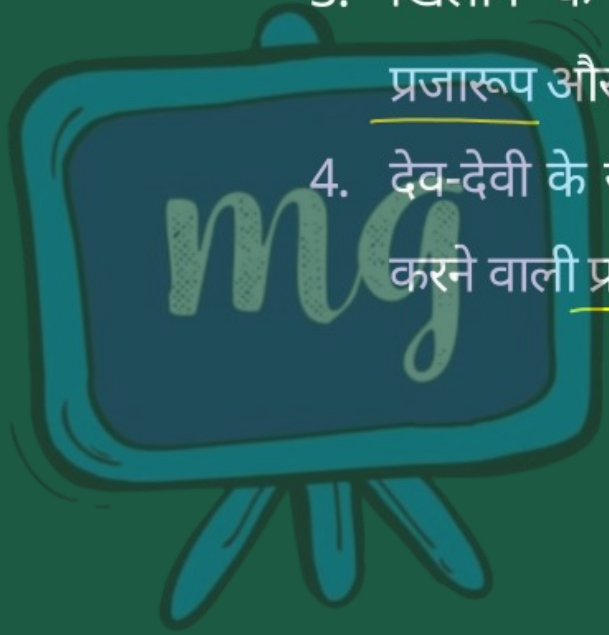
उत्तर : मृत्तिका कविता में पुरुषार्थी मनुष्यों के हाथों पायी मिट्टी के रूपों का उल्लेख निम्नप्रकार किया गया है-

1. अनाज उपजाकर हमें पालन-पोषण करने वाली मातृरूप।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

2. कलश-कुम्भ से जल लेकर आने वाली प्रियारूप।
3. खिलौने के रूप में शिशु-हाथों में पहुँचने वाली प्रजारूप और
4. देव-देवी के रूप में मनुष्यों को चिन्मयी शक्ति प्रदान करने वाली प्रतिमा का रूप।



(ख) मिट्टी के किस रूप को 'प्रिय रूप' माना है? क्यों?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) मिट्टी के किस रूप को 'प्रिय रूप' माना है? क्यों?

उत्तर : मिट्टी के द्वारा सजी हुई कुंभ और कलश को 'प्रिया रूप' में माना गया है। समाज में कुंभ और कलश का स्थान बहुत ऊँचा है। किसी भी पुण्य कर्म में (पूजा हो या विवाह हो) इसका इस्तेमाल किया जाता है। इससे लाए हुए मीठे जल को पीकर लोगों का हृदय तृप्त होते हैं। इस प्रकार कुंभ और कलश मनुष्य के लिए अति प्रिय बन जाता है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) मिट्टी प्रजारूपा कैसे हो जाती है?



(ग) मिट्टी प्रजारूपा कैसे हो जाती है?

उत्तर : कवि के अनुसार मुनष्य ने मिट्टी को 'प्रजा के रूप' में भी बदल दिया है। प्रजारूपा अर्थात संतान जैसा। बच्चे खिलौने के लिए जब मचलने लगते हैं, तब मनुष्य मिट्टी से बने खिलौने देता है। उसे लेकर शिशु सन्तुष्ट और प्रसन्न हो जाते हैं। नए – नए खिलौने जब शिशु-हाथों में पहुचँता है, तब वह उस खिलौने का संतान जैसा ख्याल रखते हैं ।

(घ) पुरुषार्थ को सबसे बड़ा देवत्व क्यों कहा गया है?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) पुरुषार्थ को सबसे बड़ा देवत्व क्यों कहा गया है?

उत्तर : मनुष्य जीवन की सफलता पुरुषार्थ पर निर्भर है। पुरुषार्थ हीन जीवन में किसी भी प्रकार का विकास नहीं होता। मनुष्य पुरुषार्थ के बल पर भी अनेक ज्ञान, अभिज्ञता के जरिए नए-नए आविष्कार करते आये हैं। प्राचीन वर्वर अंधकार जगत से आज के वैज्ञानिक सभ्यता-संस्कृति तक जितनी विकास हुई है, इसके अंतराल में पुरुषार्थ ने ही काम किया है। पशुत्व से देवत्व तक की इस लम्बी संग्राम में

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पुरुषार्थ के बिना मनुष्य को सहारा देनेवाला कोई नहीं है।

इसलिए कवि ने पुरुषार्थ को सबसे बड़ा देवत्व कहा है।



(ङ) मिट्टी और मनुष्य में तुम किसकी भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण मानती हो और क्यों?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ङ) मिट्टी और मनुष्य में तुम किस भूमिका को अधिक महत्वपूर्ण मानती हो और क्यों?

उत्तर : मिट्टी और मनुष्य में, मैं मनुष्य की भूमिका को ही अधिक महत्वपूर्ण मानती हूँ। क्योंकि मनुष्य का पुरुषार्थ ही मिट्टी को नयी- नयी पहचान और स्वरूप देता है । अगर मनुष्य अपनी कल्पनाशील ,सर्जनता एवं कारीगरी से उसे कुछ नया स्वरूप न दे तो मिट्टी सोई रह जाती। मिट्टी का अपने आँचल में धान उगाना, कलश का रूप, या फिर खिलौने का रूप धारण करना, यह सब उसके लिए अपने आप करना संभव नहीं होता है । यह मनुष्य ही है जो उसे विविध रूप –रंग प्रदान करता है ।

3. . सप्रसंग व्याख्या करोः

(क) पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो तब मैं-
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाती हूँ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

3. . सप्रसंग व्याख्या करोः

(क) पर जब भी तुम
अपने पुरुषार्थ-पराजित स्वत्व से मुझे पुकारते हो तब मैं-
अपने ग्राम्य देवत्व के साथ चिन्मयी शक्ति हो जाता हूँ।

उत्तर :

संदर्भ : यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक 'आलोक भाग-2 के अन्तर्गत नये कविता के कवि नरेश मेहता विरचित "मृत्तिका" शीर्षक कविता से ली गयी है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रसंग : इसमें कवि ने मनुष्य के पुरुषार्थ और मिट्टी के संबंधों पर प्रकाश डाला है।

व्याख्या : कवि के अनुसर पुरुषार्थ के बदलते रूपों के अनुसार मिट्टी के रूप भी बदल जाती है। पुरुषार्थ द्वारा मनुष्य अपने अहंकार को पराजित कर मिट्टी को दैवी शक्ति में बदल देता है। मनुष्य अपने चिन्मयी शक्ति को मिट्टी की प्रतिमा के जरिए अंकित किया है। पशुत्व से देवत्व तक की इस लम्बी संग्राम में पुरुषार्थ ही मनुष्य को विकास की ओर ले जाते हैं। पुरुषार्थ से बड़ा देवत्व और कोई नहीं है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ख) यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।



(ख) यह सबसे बड़ा देवत्व है, कि
तुम पुरुषार्थ करते मनुष्य हो
और मैं स्वरूप पाती मृत्तिका।

उत्तर संदर्भ : यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक आलोक भाग-2 के अन्तर्गत कवि नेरश मेहता विरचित नयी कविता "मृत्तिका" से ली गयी है।

प्रसंग : इसमें कवि ने मानव और उनकी अस्तित्व पर अपनी अभिव्यक्ति प्रकट किया है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्याख्या : कवि के अनुसार इस संसार में पुरुषार्थ ही सबसे बड़ा देवत्व है। मनुष्य अपने परिश्रम द्वारा इस धरा को स्वर्ग बना सकता है। मनुष्य जीवन की सफलता और सार्थकता पुरुषार्थ पर निर्भर है। अपने पुरुषार्थ के बल पर ही मनुष्य अपने को देवत्व में बदल सकता है । उसी प्रकार मनुष्य के हाथों में ही मिट्टी भी दैव शक्ति में ढल जाती है।

पुरुषार्थ के बिना मिट्टी मिट्टी ही रहती है,दैवी शक्ति के रूप में बदल नहीं सकती ।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

भाषा एवं व्याकरण-ज्ञान—

1. बातचीत करते समय हम शब्दों या वाक्यों का एक ही गति से उच्चारण नहीं करते। कभी हम अपनी बीत पर बल देने के लिए और कभी हम अपने आशय को स्पष्ट करने के लिए बीच-बीच में रुकते हैं। यह रुकना ही विराम है। विराम का अर्थ है- रुकना। लिखते समय विरामचिह्नों का प्रयोग आवश्यक है। इनका प्रयोग न होने से कभी-कभी वाक्य का अर्थ एकदम बदल जाता है। हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले विराम चिह्न इस प्रकार हैं:

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पूर्णविराम (Full stop)	।
अल्प विराम (Comma)	,
अर्द्ध विराम (Semi-Colon)	;
प्रश्नसूचक (Question mark)	?
विस्मयादि सूचक (Mark of exclamation)	!
कोष्ठक (Brackets)	( )

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उद्धरण चिह्न (Quotation mark) " "

निर्देशन चिह्न (Dash) —

योजक (Hyphen) -

विवरण-चिह्न (Sign of following) :-

उपविराम (Colon) :

लाघव चिह्न (Abbreviation) °

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इन चिह्नों का प्रयोग देखें -

पूर्ण विराम (।) : वाक्य के अन्त में प्रायः पूर्ण विराम लगाया जाता है, जैसे- मैं खाना खा चुका हूँ।

अल्प विराम (,) : वाक्य में जहाँ कहीं भी शब्द या वाक्यांश का उच्चारण अलग-अलग करने की आवश्यकता हो, वहाँ अल्प विराम लगाते हैं, जैसे-राम, लक्ष्मण और सीता वन को गए।

अर्द्ध विराम (;) : वाक्य में जहाँ पूर्ण विराम से कम किंतु अल्प विराम से अधिक का प्रयोग होता है, जैसे- अवसर का लाभ उठाओ; सफलता तुम्हारे चरण चूमेगी।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रश्नसूचक (?) : जिस वाक्य में कोई प्रश्न पूछा गया हो, उसके अंत में यह चिह्न लगाया जाता है, जैसे- आप कहाँ से आ रहे हैं ?

विस्मयादि सूचक (!) : इस चिह्न का प्रयोग विस्मयादिबोधक पदों या वाक्यों में तथा संबोधन के साथ किया जाता है, जैसे- अहा ! कितना सुंदर फूल है।

कोष्ठक () : सामान्य कोष्ठक में वह शब्द या वाक्य रखा जाता है तो मुख्य कथन से सम्बद्ध होते हुए भी उसका अंग नहीं होता। उदाहण के लिए - भवन निर्माण की सामग्री (ईंट, लोहा, सीमेंट, रोड़ी) बहुत महंगी हो गई है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

उद्धरण चिह्न (" ") : किसी व्यक्ति के कथन अथवा विचार या किसी ग्रंथ की पंक्ति को यथावत् उद्धृत करने के लिए इस चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे- " रघुपति रीति सदा चली आई। प्राण जाएँ पर वचन न जाई" यह कथन तुलसी दास जी का है।

योजक (-) : यह एक छोटी-सी रेखा है, जिसका उपयोग दो शब्दों के जोड़ने में होता है, जैसे- मनुष्य को हँसते-हँसते जीना चाहिए।

निर्देशक चिह्न (-) : यह योजक से बड़ी रेखा होती है। इस चिह्न का प्रयोग आगे आने वाले शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के लिए होती है, जैसे- आदर्श विद्यार्थी में निम्नलिखित गुण होने चाहिए-

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

विवरण-चिह्न (:-) : इसका प्रयोग भी निर्देशक चिह्न की तरह आगे आने वाले शब्द, वाक्यांश अथवा वाक्य के लिए होता है, जैसे-घटना का पूर्ण विवरण इस प्रकार है :-

उपविराम (:) : इसका प्रयोग भी विवरण चिह्न की तरह होता है, जैसे-संज्ञा के भेदों का विवरण इस प्रकार है :

लाघव चिह्न (०) : शब्दों को संक्षिप्त रूप में लिखने के लिए इस चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे-

डॉक्टर = डॉ०

प्रोफेसर = प्रो०

कृपया पृष्ठ उलटिए = कृ० पृ० उ०

निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाओ -

(क) महाभारत एक महान ग्रंथ है

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाओ -

(क) महाभारत एक महान ग्रंथ है।

(ख) युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल और सहदेव पाँच भाई थे



(ख) युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव पाँच भाई थे।



(ग) भारत में कुल कितने प्रदेश हैं



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ग) भारत में कुल कितने प्रदेश हैं?



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(घ) रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रकवि थे



(घ) रामधारी सिंह दिनकर राष्ट्रकवि थे।



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(ङ) कर्ण ने कहा मित्रता सुखद छाया है



(ङ) कर्ण ने कहा, “मित्रता सुखद छाया है।”



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(च) किसमें विचारों की शक्ति होती है



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(च) किसमें विचारों की शक्ति होती है ?

